सूफी साधना पथ का अध्ययन

डॉ. हरनाम सिंह अलरेजा* https://doi.org/10.61703/RE-ps-Vyt-710-24-7

सरांश

भारत में 12 वी से 16 वी शताब्दी सूफी विचारधारा के स्थापित और स्वीकृत होने का काल है। आध्यात्मिक चिंतन का सर्वाधिक नूरी और पाक व सुनहरा अध्याय ये सूफी सिलसिलें है। ये सूफी हर प्रकार की हदों को तोड़कर एक अविश्वसनीय जीवन जीते है। इन सूफियों की दुनिया ही निराली है। इन्हें किसी भी दूनियावी वस्तु, शानऔ शौकत का कोई भी लालच या लोभ नहीं है। अपने मुर्शिद के प्रति समर्पित इन सूफियों को जर्रे जर्रे में परमात्मा की झलक दिखलाई पड़ती है। भारतीय जनमानस इन सूफियों और इनकी दरगाहों से प्रेम करता है। सूफी विचारधारा या मत में साधनाएं अत्यन्त कठोर है इनमें बाल बराबर दुर्गण या चालाकी को स्वीकार नहीं किया जाता है। मुर्शिद ऐसे शिष्यों से जो दिल से पाक नहीं हो पाते, बेबाक कहते है कि जा तुझे आध्यात्मिकता स्वीकार नहीं करती है। वास्तव में सूफी व्यक्तित्व क्या है? सूफी साधना पद्धति क्या है? इसी की खोज और व्याख्या प्रस्तुत शोध पत्र का प्रतिपाघ विषय है।

कुजीपद– सूफी व्यक्तित्व, शरीयत, तरीकत मारिफत हकीकत, फना, बका, सात घाटिया

ज्ञात दृश्य जगत कौतुहलपूर्ण सर्जना है। मानव सदैव इसे समझना–बूझना चाहता है। प्रत्येक धर्म तथा दर्शन में जगत् के प्रति एक विशिष्ट दृष्टिकोण होता है तथा भिन्न–भिन्न साधना तथा पद्धतियों द्वारा इस दृष्टिकोण को दृढ़ किया जाता है। वैसे इस जगत् के अलावा जिज्ञासा व ज्ञान के केन्द्र परममूल तत्व परमात्मा तथा जीव का स्वरूप भी है। प्रश्न यह भी है कि क्या इस जीव और जगत् के मध्य प्राकृतिक भोक्ता भोग्य संबंध ही सत्य है? अथवा अन्य भी कोई रहस्य है? यही नहीं परमात्मा यदि स्वयं पूर्ण है तो उसने मानव या व्यक्ति को अपूर्ण क्यों बनाया है? सूफी दर्शन में भी इन सारे सवालों, जिज्ञासाओं के समाधान दिए गए है, उसके अनुसार इस सृष्टि में मानव या व्यक्ति ही पूर्ण है, ईश्वर या परमात्मा ने उसके स्वरूप को पूर्ण अभिव्यक्ति प्रदान की है, इसलिए इस पूर्णता की अनुभूति करना प्रत्येक मानव का चरम लक्ष्य होना चाहिए। ''प्रत्येक मानव के भीतर पूर्णता बीज–रूप में संभवतः

*विभागाध्यक्ष (दर्शन शास्त्र) शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव छत्तीसगढ़ मो. 9425245714 ई–मेल. hsalreja@gmail.com

निहित रहा करती है और इस कारण इसमें सभी ईश्वरीय गुणों की संभावना है।''[1] सभी जिज्ञासाओं का पर्यवसान इस पूर्णतारूपी बीज के प्रस्फूटन में है। अतः साधक के सार प्रयास इसी दिशा में होने चाहिए।

सूफी मत में साधक को अपने मूल स्वरूप तक पहुँचने के लिए लंबा सफर तय करना पड़ता है, इसलिए साधक या जीव को सफर करने वाला यात्री कहा जाता है, जिसकी मंजिल पूर्णता है। इस यात्रा में यात्री को विशिष्ट व्यक्तित्व, जो अनिवार्य–नैतिक गुणों से मिलकर बना है, तथा अपने मुर्शिद या गुरू द्वारा बतलाई गई साधनाओं के रास्तें पर चलना पड़ता है, जो उसके आकलन का आधार बनती है। यह सफर स्वाभाविक है ''सूफियों के अनुसार आत्मा परमात्मा में लौट जाने के लिए अनजाने उत्सुक रहती है क्योंकि वही उसका मूल उद्‌गम है।''[2] इस यात्रा रूपी साधना में, साधकों के अलग–अलग रूपों का वर्णन मिलता है, साध ही साधक के स्वरूप में निहित शक्तियों का भी प्रकटीकरण होते रहता है।

सूफी मत में व्यक्ति या साधक को स्पष्ट करने के लिए यह बतलाना अनिवार्य है कि सूफियों के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा के दो भेद होते है जिन्हें नफ्स तथा रूह कहा जाता है। नफ्स भावना के आवेग से संचालित निम्नकोटि का व्यावहारिक रूप है। इसी नफ्स रूप के कारण कई प्रकार की कूप्रवृतियों, स्वार्थ, सुखभोग की इच्छाओं का जन्म होता है। सूफी मत के अनुसार नफ्स आधारिक जीवन बंधन है, कैद है, यह आत्मा को नरक की ओर ले जाता है इसलिए इस नफ्स पर नियंत्रण अनिवार्य है। यह नियंत्रण ही रूह को परमात्मा की ओर उन्मुख करता है। ''इस चिंतन के आधार पर संसार एक बंदीग्रह है। आत्मा शरीर के बंधन में है। कामनाएं पिंजर की तीलिया है। इनसे मानव उसी स्थिति में मुक्ति प्राप्त कर सकता है, जब वह इस बंदीग्रह की दीवारे तोड़ दे और दिन–प्रतिदिन बढ़ती इच्छाओं के पिंजरे से अपनी आत्मा को स्वतंत्र करा ले। अपने मूल तथा मूल इच्छाओं को कुचल कर नष्ट कर दे।''[3]

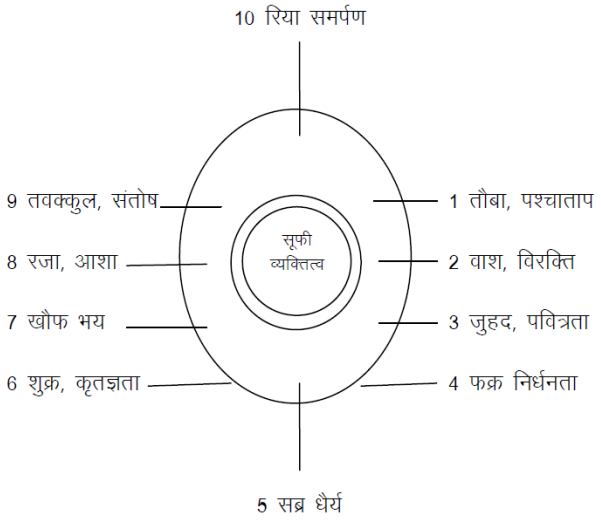

अपनी रूह को कामनाओं से मुक्त कर मूल स्वरूप परमात्मा तक पहुंचने के लिए एक सूफी को निम्नलिखित 10 गुणों का धारण करना पड़ता है।

इन गुणों की व्याख्या इस प्रकार है :–

1. तौबा–यह वह लक्षण है, जिसे सूफियों ने हर मकाम का मूल और हाल की कुंजी कहा है। इस गुण से उन सभी अशुभ कर्मो, बुरे विचारों से बचा जा सकता है जो निन्दनीय है तथा मानव को गर्त में पहुंचा देती है इसलिए कहा गया है कि ''तौबा साधक को अल्लाह का प्रिय बना देती है।''[4]

2–3. वाश (विरक्ति) तथा फक्र (निर्धनता) – सूफी पथ की ओर अग्रसर होने के पूर्व जो अनिवार्य विशेषताएं होनी चाहिए, वह यही है। सांसारिक वस्तुओं से पूर्ण वैराग्य तथा मन में किसी भी प्रकार के लालच, स्वार्थ के भाव से बचने के लिए सूफी गुरूओं ने अपने कई धनी, अमीर, सम्राट शिष्यों से सर्वस्व त्याग ही नहीं करवाया, वरन् भीख भी मंगवाई हैं जून्नून मिस्त्री कहते है – ''सूफी वह है जब बोले तो उसके मुख से सत्य प्रवाहित हो और जब चुप हो तो उसकी देह का एक–एक रौगटा यह गवाही दे कि उसके भीतर संसार का कोई मोह और लोभ नहीं।''[5]

इस त्याग से उत्पन्न निर्धनता द्वारा, अहंकार को खत्म करना भी विशेष उद्देश्य रहा है।

4. जुहद (पवित्रता) – सूफियों के संदर्भ में यह लक्षण केवल उसके शरीर, हृदय, मन, बुद्धि आदि शुद्धता या पवित्रता को चरितार्थ नहीं करता वरन् एक सूफी के व्यक्तित्व का, संपूर्ण प्रकृति के प्रति अहिंसात्मक और पवित्र भाव, को दर्शाता है।

5–6. सब्र (धैर्य) शुक्र (कृताज्ञता) – जब सूफी अपने नफ्स रूप अर्थात अपनी इन्द्रियों, मन बुद्धि आदि को नियंत्रित रखता है तो उसके अन्दर सब्र उत्पन्न होता है जो उसकी साधना रूपी यात्रा में स्थिरता, अविचलित अवस्था का जनक होता है तथा सूफी प्रतिकूल अवस्था में भी न डिगकर परमात्मा के आभार या कृतज्ञता से भरा हुआ होता है।

7–8. खौफ (भय) रजा (आशा) – इन दोनों गुणों को सूफियों ने यात्रा के दो पहियों की तरह कहा है, जो मकाम तक पहुंचाने में सहायक है। ''सूफियों ने खौफ (डर) और रिजा (आशा) को चिड़िया की दो भुजा कहा है। इन दोनों के साथ ही एक व्यक्ति अपने अभीष्ट को प्राप्त करता है और मंजिल तक पहुंचता है।''[6]

9–10. तवक्कुल (संतोष) रिया (समपर्ण) – अल्लाह या ईश्वर की देन के प्रति पूर्ण स्वीकरण का भाव तवक्कुल हैं। यह सूफियों के लिए आध्यात्मिक गुण है जिसका परिणाम भी इसी की तरह

उच्चतर है जिसे रिया कहा जाता है, जिसमें सारी इच्छाएं साधक की न होकर परमात्मा की हो जाती है।

उपर्युक्त 10 गुणों से युक्त साधक ही सूफी पथ का अधिकारी होता है। उसे गुरू चार प्रकार की साधनाएं करवाता है जिन्हें जिक्र, फिक्र, मुजाहिदा और मुराकबा कहा जाता है।

जिक्र परमात्मा के नाम का स्मरण है यही स्मरण जब गहन हाकर आंतरिक हो जाता है, दूसरे शब्दों में हृदय से जब उस परमात्मा का एकाग्र होकर स्मरण किया जाता है तो यह फिक्र कहलाता है। इस फिक्र में परमात्मा के याद के अलावा ध्यान, एकाग्रता के अनेक प्रकार भी है जैसे ''अल्लाह की रचनाओं में चिंतन, अल्लाह के गुणों में चिंतन, बुराई के कामों में चिंतन, भलाई के कामों में चिंतन, विनाशक कार्यो में चिंतन, मुक्ति दिलाने वाली नेकियों में चिंतन।''[7] आदि। इसके पश्चात् मुजाहिदा का अर्थ जेहाद या धर्मयुद्ध है किन्तु यह युद्ध चित में उठने वाले विकारों के प्रति है और इसके लिए मुराकबा सहायक है। मुराकबा कुरान में चुने हुये स्थलों को पाठ करते हुये साधना करना होता है। इन चार प्रकार की साधनाओं को करने वाला सूफी सालिक या सर्वश्रेष्ठ यात्री की उपधि प्राप्त करता है और गुरू उसे साधनाओं के साथ साथ अनुभूति के क्षेत्र में भी प्रविष्ठ करा देता है जिनकी व्याख्या भी चार प्रकार से की गयी है।

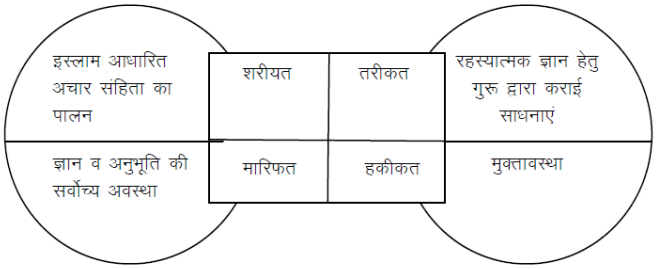

शरीयत में साधक को गुरू इस्लाम मजहब की जीवन शैली पर चलने को जोर देता है जिसमें इबादत, नमाज, रोजा, जकात एवं हज का पालन किया जाता है लेकिन इन सारी साधनाओं में गुरू साधक की मनःस्थिति, नीयत, व्यवहार आदि के पाक–पवित्रता को सर्वाधिक महत्व देता है। इमाम गजाली कहते है– ''जाहिर को तो कपड़ों में छिपा लोगे पर बातिन को अल्लाह से कैसे छिपाओगे? इसलिए उसके सामने मान–सम्मान से पेश आओ और यकीन रखे कि वह दिलों के भेदों तक जानता है।''[8] शरीअत साधक की प्रारंभिक अवस्था है, इसके पश्चात् तरीकत की अवस्था आती है जहां गुरू के अनिवार्य, विशेष उपस्थिति का कारण ज्ञात होता है। गुरू तरीकत के स्तर पर पहुंचे साधक के अन्दर परमात्मा की तीव्र प्यास को उत्पन्न कर देता है, साधक दिन–रात इस विरह रूपी प्यास में तड़पने

लगता है। ''जिस प्रकार एक प्रेमी अपने प्रियतमा से मिलने के लिए सदैव आतुर रहता है। ''उसी प्रकार सूफी भी ईश्वर के अधिकाधिक सामीप्य के लिए बैचेन रहता है और मैं ''और जो ''मै। नहीं हूँ'' उसके बीच का भेद भुला देना चाहता है।''[9] इस आतुर और बेखुद अवस्था में जीवन के अनेक रहस्यों का धीरे–धीरे प्रकटीकरण होता रहता है तथा साधक इन उत्तरोत्तर रहस्यों से आल्हादित, सारे अशुभो का त्याग–कर देता है और विशुद्ध, पाक–पवित्र होकर तृतीय मारिफत के स्तर पर पहुंच जाता है मारिफत में साधक का अहं या स्व छूट जाता है और इसका जीवन इस्लाम या ईश्वर प्रेरणा से संचालित होता है। ''इस अवस्था पर पहुंचकर सालिक आरिफ (ज्ञानी) की संज्ञा प्राप्त करता है। यहां आकर उसे परमात्मा का ज्ञान प्राप्त हो जाता है और वह उसके समस्त रहस्यों को जान जाता है। उसमें हाल (मूर्च्छा) की अवस्था आती है क्योंकि वह उस रूप के रस में निमग्र हो जाता है। जो वर्णन से परे है।''[10] मारिफत की अवस्था साधक को उसके मूल पड़ाव या मंजिल, जो कि पूर्णता है, उस मुक्ति की ओर ले जाती है। इसे हकीकत कहा जाता है। यह चौथी और अंतिम अवस्था है यहां साधक और परमात्मा एकरूप हो जाते है अथवा साधक को सिर्फ परमात्मा के अस्तित्व की ही अनुभूति चहुंओर होती हैं। इस अवस्था में जब ज्ञान का बोध भी खत्म हो जाता है तो सूफी इसे ''फना'' कहते है। फना में वासनाओं का नाश, बुद्धि मन की परिशुद्धि के साथ चैतन्य शक्ति भी निष्क्रिय हो जाती है। साधक चूंकि हमेशा परमात्मा की याद या स्मृति से लबरेज होता है इसलिए उसका हर कार्य नैतिक नियम बन जाता है। तब जब उसका असितत्व परमात्मा में विलिन हो जाता है तो इसे हकीकत की सर्वोच्च अवस्था बका कहा जाता है, जहां सूफी अपनी यात्रा समाप्त कर मकाम पर जा पहुॅचता है। फना और बका में अंतर बतलाया जाता है कि ''फना की व्याख्या साधारतः उस अवस्था के रूप में की गई है जिसमें मनुष्य के सांसारिक विषय–विकार, आकांषाए–एषणाएं और समस्त द्वन्द्व समाप्त हो जाते है। उसके अहं का पूर्णतः विनाश हो जाता है। इसलिए सूफी 'मैं' के समाप्त होने की बात तरह–तरह से करते है। इसके बाद बका की स्थिति आती है जिसमें परमात्मा के साथ उसका तादात्म्य या विलय हो जाता है और इसी महामिलन की अवस्था में वह रहने लगता है।''[11] इस प्रकार सूफी दर्शन में सूफी की यात्रा का यह लक्ष्य ही उसका मूल स्वरूप है। जिसे वह प्राप्त चाहता है।

उपर्युक्त संपूर्ण विवेचना को महान सूफी साधक फरीदुद्दी अत्तार ने बेहद सरल और विशिष्ट अंदाज में, अपने दर्शन में प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार प्रत्येक साधक को प्रेम–पथ की सात घाटियों से गुजरना पड़ता है, वैसे तो ''इमाम गजाली ने एक स्थल पर लिखा है– ''अल्लाह सत्तर हजार पर्दो के भीतर है जिसमें से कुछ प्रकाशमय और कुछ अंधकारमय है और यदि वह उन आवरणों को हटा लेवे तो जिस किसी की दृष्टि उस पर पड़ेगी, वह उसके प्रखर प्रकाश द्वारा दग्ध हो जाएगा। इन पर्दो में आधे प्रकाश के आधे अंधकार के बतलाये गए है और कहा गया है कि साधक को परमेश्वर से मिलने के लिये जाते समय, मार्ग में सात स्थानों से होकर जाना पड़ता है, जिसमें से प्रत्येक दस पर्दो से आवृत्त है।''[12] संत फरीदृद्दीन अत्तार ने इन सात घाटियों के स्वरूप को इस प्रकार प्रकट किया है–

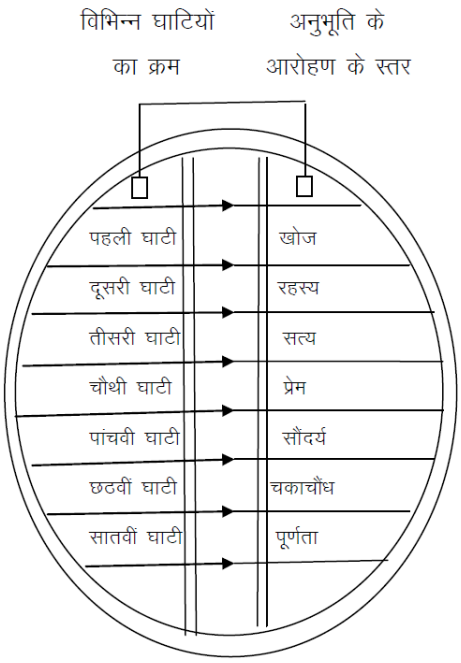

इस यात्रा पर निकल पड़ने की पहली शर्त है खिरका पहनना, जो गुरू साधक को पहनाता व पहनता है। खिरका पहनना का पर्यायवाची कफन पहनना हो सकता है, दूसरे शब्दों में इसकी अनिवार्यताएं भी वही है जो कफन ओढ़ाने की होती है। मुर्दे के समान मुरीद बनकर ही यात्रा की शुरूआत होती है। पहली घाटी खोज की घाटी है, गहन जिज्ञासा एवं साधना उसका उपादान है। यह अत्यन्त परिश्रम साध्य घाटी है, इसमें गुरू इतनी कठिन परिक्षाएं लेता है कि अधिकांश साधक तो भाग खड़े होते है केवल वे ही टिक पाते है जो उस परमज्योति के प्रति जिज्ञासात्मक ध्यान केन्द्रित कर पाते है। यहां सांसरिक वस्तुओं का त्याग ही नहीं, अनेक अपमानों को भी सहन करना पड़ सकता है।

इस पहली खोज की घाटी को मुक्कमल रूप से साधक, जब पार कर लेता है तो उसे ब्राह्मन्ड़ के, प्रकृति के प्रत्येक अस्तित्व में रहस्य के दीदार होते है, यहां दूसरी रहस्य की घाटी है, जहां वह सृष्टि की विविधता, अनन्तता, असीमिता को देखकर रोमांचित हो उठता है। वह अपने जीवन के चारों ओर रहस्य के दर्शन करता है। यह रहस्य उसकी दृष्टि को विस्ताार देते हुए एक अनुपम दृष्टिकोण को विकसित कर देता है। अब उसे अनेक शक्तियों का पूर्वाभास होने लगता है।

जब रहस्य का कोहरा छट जाता है तो उसके पीछे सत्य का उदय होता है, जो कि तीसरी घाटी का द्वार है। इसमें प्रवेश द्वारा सर्वप्रथम साधक को जिस अन्तर्ज्ञान की अनुभूति होती है वह यह है कि उसे बहुआयामी, विविधतापूर्ण, अनन्त परस्पर विरोधी पदार्थो से बना जगत् एक कठिन पहेली या गणित की तरह नजर नहीं आता है। वरन् इस रहस्यमयी सवाल को वह अद्वैत–सत्य से सुलझा लेता है। जिसमें वे सारे फूल एक ही तार में गूथे हुए होते है। वह जान लेता है कि सारी सृष्टि उस एक सत्य में, परिव्याप्त है। इस घाटी में साधक का आभामंडल प्रकाशमय हो उठता है।

अब साधक उस एक विराट सत्य के अन्तर्ज्ञान के साथ चौथी घाटी में प्रविष्ट होता है जो प्रेम की घाटी है जहां दूनियावी कृत्यों से मुक्त उसे ईश्वरत्व की झलक मिलनी प्रारंभ हो चुकी है तथा उसके व्यक्तित्व में स्वार्थ, लोभ की अनासक्तता के कारण करूणा का निःसृत प्रवाह हो रहा है। वह सारी सृष्टि में निहित, एक सत्य की अनुभूति प्राप्त कर लेने के कारण जर्रे–जर्रे से प्रेम करने लगा है। यहां सूफी साधक बायजीद बिस्तामी की अनुभूति उल्लेखनीय है वे कहते है कि ''मैं समझता था मैं परमात्मा से प्रेम करता हूँ लेकिन गौर करने पर मैने देखा कि मेरे प्रेम करने के पहले से ही वह मुझसे प्रेम करता है।''[13] यहां सारी सृष्टि से प्रेम के साथ, साधक के अन्दर विरह की तड़प तीव्रता से भड़कने लगती है– ''हे प्रियतम तेरे इश्क में मेरे दिल में डेरा जमा लिया है। अब तेरे प्रेम का प्याला, वियोग में, जहर का प्याला बन गया है, इसे मैंने खुद ही भरकर पिया है इसलिये मेरे मुर्शिद फौरन चले आवो, वरना मैं मर जाऊँगी।''[14] यह प्रेम का ही प्रकाश है जिसने सूफी साधक के जीवन रोशन कर दिया है और वह अभिभूत हो सौदर्य की पांचवी घाटी में प्रवेश करता है जहां उसे अपने प्रियतम के अलावा और किसी का ध्यान नहीं है। सत्य और प्रेम से लबरेज साधक उस अद्वैत परमात्मा के सौदर्य में बेसुध है ''हुर्ज्वेरी ने बताया कि परमात्मा की दो विभूतियां है– जलाल (एश्वर्य) और जमाल, जब साधक के सामने उसका जलाल रहता है तो उसमें भय की भावना उत्पन्न होती है और वह उसके भय से उसे मान्यता देता है पर जब उसका जमाल (सौन्दर्य) प्रधान हो जाता है तो उस पर मुग्ध होकर साधक उसी का हो जाता है। उसमें उसके साथ अपनत्व का नाता बन जाता है। अपनत्व में आनंद सन्निहित है अतः प्रेमी परमात्मा के प्रेम में एक अनिर्वचनीय आनंद की अनुभूति करता है उसी में निमग्न होकर उसके साथ एकत्व का अनुभव करने लगता है।''[15] अब साधक के पास एक अन्तर्दृष्टि और शक्ति का संग्रह हो चुका है। वह अनेक रहस्यों के भेद को जान लेता है, उसके संकल्प और इच्छा मात्र से ही बाह्य कृत्य मूर्तिमान हो उठते है। प्रकृति उसे ऊर्जा ही प्रदान नहीं कर रही है वरन् उसकी गुलाम बनकर उसके साथ है। इसके अनेक उदाहरण हमें महान सूफी साधकों के जीवन से प्राप्त होते है, जिन्हें उनके चमत्कार कहा जाता है। लेकिन इस अपूर्व शक्ति और असीमित ऊर्जा के कारण वह गर्वोन्मत, अहंकारी बन सकता है, इसके लिए ही छठवी घाटी का निर्माण हुआ है। छठवी घाटी परीक्षा और संयम की घाटी है जिसे चकाचौंध की घाटी कहा गया है। इस घाटी में साधक के पास यह स्वतंत्रता है कि वह चाहे तो अपनी ऊर्जा का दुरूपयोग कर गर्त में जा सकता है और सारे प्रकाश और शक्ति की दिशा बदलकर अंधकार की ओर चलते हुए अपने व्यक्तित्व को विकृत कर सकता है। इस घाटी में उसकी कठिन परीक्षाएं भी ली जा सकती है लेकिन यदि साधक ने स्वयं को नियंत्रित रखते हुये, लक्ष्य से अपनी निगाहे नहीं फेरी तो वह सातवी घाटी में प्रवेश कर जाता है जो कि हर सूफी साधक का मकाम है। यह पूर्णता और विलयन की घाटी है जहां वह अपने प्रियतम से महामिलन कर, मुक्त हो जाता है। यही उसका चरम व मूल स्वरूप है।

संदर्भ एवं टिप्पणियां

1. चतुर्वेदी, आचार्य परशुराम, सूफी काव्य संग्रह, पृष्ठ 31. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद, 2005

2. सिंह, डॉ. कन्हैया, सूफी मत, पृष्ठ 35. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1998

3. रजा, जाफर, इस्लामी आध्यात्म सूफीवाद, पृष्ठ 36. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2004

4. यजदानी, डॉ. कौसर, सूफी दर्शन एवं साधना, पृष्ठ 200. जेन्युइन पब्लिकेशनस एण्ड मीडिया प्रा. लि. नई दिल्ली, 2005

5. वही, पृष्ठ 15.

6. वही, पृष्ठ 99.

7. वही, पृष्ठ 230.

8. वही, पृष्ठ 194.

9. श्रीवास्तव, डॉ. अशिर्वादी लाल, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं. आगरा, 2006, पृष्ठ 68.

10. सिंह, डॉ. कन्हैया, सूफी मत, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1998, पृष्ठ 39.

11. वही, पृष्ठ 53.

12. चतुर्वेदी, आचार्य परशुराम, सूफी काव्य संग्रह, पृष्ठ 33.

13. सिंह, डॉ. कन्हैया, सूफी मत, पृष्ठ 47.

14. वास्तविक एवं संपूर्ण बुल्लेशाह की काफियां, पृष्ठ 38.

15. सिंह, डॉ. कन्हैया, सूफी मत, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1998, पृष्ठ 46.